Behavioural Research
व्यवहारपरक अनुसंधान

Pol. Science
Dr. S. B. Kumar

द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त परम्परागत राजनीतिक सिद्धांतों के प्रति आक्रोश पैदा हुआ जिसके फलस्वरूप नवीन विचारधारा की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी। इसका प्रारंभ USA में चार्ल्स मेरियम, आर्थर बेंटले तथा लासवेल जैसे विचारकों ने किया। इस नवीन विचारधारा को कई नामों से पुकारा गया, जैसे – समकालीन राजनीतिक सिद्धांत (Contemporary Political Theory), व्यवहारवाद (Behaviouralism), अनुभववाद (Impiricism), मूल्य विहीन वैज्ञानिक अध्ययन (Value-free Science of Politics) अथवा आधुनिक राजनीति विज्ञान (Modern Political Science)। प्रस्तुत अध्ययन व्यवहारवाद (Behaviouralism) के दृष्टिकोण से व्यवहारवादी अनुसंधान को समझने का प्रयास है।

व्यवहारवाद परम्परागत राजनीति विज्ञान का विरोध करता है तथा शोध प्रविधियों (Research techniques) के प्रयोग द्वारा राजनीति विज्ञान को अधिक वैज्ञानिक बनाने का प्रयास करता है। राबर्ट ए० डाहल के अनुसार "व्यवहारवाद परंपरागत राजनीति विज्ञान की उपलब्धियों के प्रति असंतोष का परिणाम है, जिसका उद्देश्य राजनीति विज्ञान को अधिक वैज्ञानिक बनाना है।

व्यवहारपरक अनुसंधान – इसके अंतर्गत मनुष्य के व्यवहार का अध्ययन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के संदर्भ में किया जाता है। व्यक्ति और समूह के वास्तविक व्यवहार की एकरूपता को जानने का प्रयास व्यवहारवाद में किया जाता है। व्यवहारवाद में राजनीतिक चिन्तन सिद्धांत की अपेक्षा व्यवहारिक मान्यताओं से अधिक संबंधित है। व्यवहारवाद के पीछे यह मान्यता है कि मनुष्य की अपनी भावनाएँ, मनोवृत्तियाँ, आकांक्षाएँ, अभिलाषाएँ, दृष्टिकोण और लगाव होते हैं। मनुष्य का राजनीतिक व्यवहार बहुत कुछ इन मानसिक प्रवृत्तियों द्वारा अनुशासित होता है। इस प्रकार व्यवहारवादी अनुसंधान राजनीति का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

डेविड ईस्टन ने 1953 में प्रकाशित अपनी पुस्तक "पॉलिटिकल सिस्टम" में व्यवहारवाद का अर्थ बताते हुए कहा है कि "व्यवहारवाद एक विशेष मनःस्थिति मात्र नहीं है, बल्कि उससे कुछ अधिक इस अर्थ में है कि शोधकर्ता जब राजनीतिक व्यवहार की संकल्पना (hypothesis) को आधार मानकर कार्य करता है तो राजनीतिक व्यवस्थाओं में भाग लेने वाले घटकों को (Components) को व्यक्तियों के रूप में देखता है। व्यवहारवादी शोध वास्तविक व्यक्ति पर अपना समस्त ध्यान केन्द्रित करती है।"

इस प्रकार व्यवहारवादी शोध अथवा अनुसंधान राजनीतिशास्त्र के अनुभविक तत्वों को वैज्ञानिक बनाने का एक व्यवस्थित प्रयास कहा जा सकता है।

व्यवहारवाद के उद्देश्य (Objectives of Behaviouralism) – इसके निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

Scanned with CamScanner

1.) राजनीतिक घटनाओं का यथासंभव स्पष्टीकरण देना और भविष्यवाणी करना।
2.) सैद्धांतिक ढाँचे के आधार पर राजनीति विज्ञान में शोध करने पर बल देना।
3.) आधुनिक राजनीतिक विज्ञान की व्यापक तुलना करने के लिए।
4.) राजनीतिक प्रास्थापनाओं (Postulates) के लिए तथ्य संग्रह करना और उनका विश्लेषण करना।
5.) राजनीति विज्ञान में उपलब्ध सभी विकसित तकनीकों का प्रयोग करना।
6.) व्यक्ति को अध्ययन का केन्द्र-बिन्दु बनाना, न कि राजनीतिक संस्थाओं को।

अतः व्यवहारवादी शोध का मुख्य उद्देश्य राजनीतिक संस्थाओं के अध्ययन के स्थान पर राजनीतिक स्थिति में व्यक्ति के व्यवहार के विश्लेषण पर ध्यान केन्द्रित करना है और विश्लेषण की मूल इकाई 'संस्था' के स्थान पर व्यक्ति के 'राजनीतिक व्यवहार' को बनाना है।

व्यवहारवाद के लक्षण (Characteristics of Behavioural Research)

डेविड ईस्टन ने अपने निबंध "व्यवहारवाद का वर्तमान अर्थ (The Current Meaning of Behaviouralism) में व्यवहारवाद की विशेषताओं को निम्न प्रकार प्रस्तुत किया है:

1.) नियमितताएँ (Regularities) – मनुष्य के व्यवहार में व्यवहारवादी कुछ असमानताओं के साथ समानताएँ भी पाते हैं। इन समानताओं के आधार पर मनुष्य के व्यवहार संबंधी सामान्य नियमों का निर्माण किया जा सकता है जिनके आधार पर राजनीतिक घटनाओं की व्याख्या करके भविष्यवाणी की जा सकती है।

2.) सत्यापन (Verification) – मानव-व्यवहार से संबंधित सामग्री को दोबारा जांचने-परखने और उनकी सत्यता सिद्ध करने की प्रवृत्ति सत्यापन कहलाती है। व्यवहारवादी शोध में भी इस पद्धति को अपनायी जाती है और यह पद्धति वैज्ञानिक पद्धति है।

3.) प्रविधियाँ (Techniques) – मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाली प्रविधियों में प्रश्नावली (Questionnaire), पर्यवेक्षण (Observation), सहभागी पर्यवेक्षण (Participated observation), विषय-विचार विश्लेषण (Content analysis) आदि शामिल हैं जो प्राकृतिक विज्ञानों में इस्तेमाल किए जाते हैं।

4.) परिमाणीकरण (Quantification) – व्यवहारवादी अध्ययन में परिमाणीकरण का सहारा लिया जाता है। विषय के संबंध में आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं, जिनके आधार पर निष्कर्ष निकाले जा सकें।

5.) मूल्य (Value) – व्यवहारवादी शोध अधिक वैज्ञानिकता की चाहत में पूर्णतः उसी प्रकार मूल्य-निरपेक्षता (value neutrality) का पक्षपाती है जिस प्रकार प्राकृतिक विज्ञान। अतः व्यवहारवादी नैतिक मान्यताओं एवं मूल्यों की दृष्टि से तटस्थ रहते हैं ताकि अध्ययन वस्तुनिष्ठ (Objective) हो सके।

Scanned with CamScanner

6.) क्रमबद्धीकरण (Systematization) – व्यवहारवादी यह दावा करते हैं कि राजनीति विज्ञान में शोध अधिक से अधिक क्रमबद्ध होना चाहिए। अर्थात् शोध सिद्धांत सम्बद्ध और सिद्धांत से निर्देशित होना चाहिए।

7.) विशुद्ध विज्ञान (Pure Science) – व्यवहारवाद में सिद्धांत और उनका प्रयोग वैज्ञानिक माना जाता है। किसी भी सिद्धांत का उद्देश्य जीवन की समस्याओं को सुलझाना है। यही तथ्य व्यवहारवादी शोध में भी लागू होता है।

8.) एकीकरण (Integration)– मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते अनेक प्रकार के कार्य करता है जो राजनीतिक, आर्थिक, नैतिक, धार्मिक सामाजिक आदि नामों से जाने जाते हैं। इनके अलग-अलग विषय होते हुए भी इनमें परस्पर संबंध है; अर्थात् एक क्रिया-कलाप दूसरे को प्रभावित करते हैं। इसरे शब्दों में समस्त मानव-व्यवहार एक ही पूर्ण इकाई है और उसका अध्ययन समग्र रूप में होना चाहिए।

व्यवहारवादी शोध की अन्य विशेषताएँ इस प्रकार है:

1.) व्यक्ति व समूहों का अध्ययन (Study of Individual and groups)
2.) अंत:शास्त्रीय (Interdisciplinary)
3.) अंत:निर्भरता (Interdependence)
4.) संरचना नहीं वरन् प्रकार्य का अध्ययन (Study of functions not structure)
5.) व्यौरी अध्ययन इकाईयों, स्तरों तथा अवधारणाओं का प्रयोग
6.) वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग (Use of Scientific methods)
7.) तथ्यों व मूल्यों के पूर्ण पृथक्करण पर बल (Emphasis on separation of facts and values)
8.) अंत: अनुशासन दृष्टिकोण (Interdisciplinary Approach)
9.) अनुभववाद (Empiricism)
10.) व्यवहारपरक सिद्धांत (Behavioural Theory)
11.) एकीकरण में आस्था (Faith in Integration)
12.) रचनात्मक एवं समाधानात्मक कार्य (Constructive and ~~solvable~~ Soluble work)

इस प्रकार व्यवहारपरक शोध, जो कि मुख्य रूप से राजनीति शास्त्र के अंतर्गत व्यक्ति के राजनीतिक व्यवहारों के अध्ययन अथवा शोध से जुड़ा हुआ है, में वैज्ञानिक पद्धति (Scientific methods) की सभी विशेषताओं का प्रयोग किया जाता है। यद्यपि व्यवहारपरक शोध में परिणाम प्राय: संभावनाओं (possibalities) पर आधारित होते हैं फिर भी आँकड़ों को एकत्रित कर तथा गणित के कुछ नियमों का प्रयोग करते हुए व्यक्ति तथा समूह के राजनीतिक व्यवहार का अनुमान लगाने का प्रयास किया जाता है। वैज्ञानिक शोध की तरह इसके निष्कर्ष उतने व्यक्तिनिष्ठ (objective) नहीं हो पाते हैं फिर भी इसने राजनीति शास्त्र को विज्ञान बनाने में भरपूर सहायता की है।

Scanned with CamScanner